Pareto's theory of welfare Economics

वी. परेटो सर्वप्रथम अर्थशास्त्री थे जिन्होंने तृष्टिगुण (उपयोगिता) के क्रमवाचक विचार के आधार पर कल्याणकारी अर्थशास्त्र के विचार प्रस्तुत किया। परेटो ने सामाजिक अनुकूलतम का विचार प्रस्तुत किया। परेटो की सामाजिक अनुकूलतम वह स्थिति है जिसके अन्तर्गत साधनों (Inputs) अथवा उत्पादनों (outputs) के पुनरावंटन (re-allocation) द्वारा बिना किसी व्यक्ति को हीनतर (worse-off) किये हुए किसी अन्य व्यक्ति को श्रेष्ठतर (better off) करना सम्भव नहीं होता है।

जैसा कि परेटो ने स्वयं स्पष्ट रूप में लिखा है, "हम लोग अधिकतम सन्तुष्टि या कल्याण की स्थिति को परिभाषित करते हैं जिसके अन्तर्गत किसी प्रकार का ऐसा स्वेच्छ परिवर्तन करना असम्भव है जिससे कि स्थिर रहने वाली संतुष्टियों के छोड़कर, सभी व्यक्तियों की सन्तुष्टियाँ बढ़ जाएँ अथवा घट जाएँ। इस प्रकार, परेटो अनुकूलतम की दशा में संसाधनों के पुनर्गठन द्वारा बिना किसी अन्य व्यक्ति के कल्याण को कम किए किसी अन्य व्यक्ति के कल्याण में वृद्धि करना असंभव होता है। अतः यदि किसी स्थिति में समाज से वस्तुओं तथा सेवाओं, अथवा उत्पादन के साधनों के विभिन्न प्रयोगों में पुनर्वितरण द्वारा कल्याण में वृद्धि सम्भव है तो वह अनुकूलतम दशा नहीं होगी।

पेरेटो मानदण्ड (Pareto Criterion)

पेरेटो मानदण्ड के अनुसार यदि कोई परिवर्तन किसी को हानि नहीं पहुँचाता तथा कुछ लोगों को श्रेष्ठतर बनाता है तो वह सुधार है। जैसा कि बाउमोल (Baumol) ने स्पष्ट किया है कि "कोई परिवर्तन जो किसी को हानि नहीं पहुँचाता तथा कुछ लोगों को (उनके स्वयं के अनुसार में) श्रेष्ठतर बनाता है, आवश्यक रूप से सुधार समझा जाना चाहिए।

पेरेटो के इस विचार को एजवर्थ बाउले बॉक्स रेखाचित्र द्वारा सरलतापूर्वक समझा जा सकता है जो उपयोगिता की अमापनीयता तथा अन्तर्वैयक्तिक तुलना असम्भव की मान्यता पर आधारित है। माना कि समाज में दो व्यक्ति A और B हैं जो x तथा y वस्तुओं का उपभोग करते हैं। x तथा y वस्तुओं के संयोगों से प्राप्त होने वाली संतुष्टि को Indifference Curve द्वारा दिखाया जाता है। A व्यक्ति का मूल बिन्दु O_A तथा इसका सन्तोष के स्तर को $I_{a_1}, I_{a_2}, I_{a_3}$ द्वारा दिखाया गया है। B व्यक्ति का मूल बिन्दु O_B है तथा इस व्यक्ति को प्राप्त होने वाले सन्तुष्टि को I_{b_1}, I_{b_2}, I_{b_3} द्वारा दर्शाया गया है। माना कि A तथा B में x तथा y वस्तुओं के वितरण की स्थिति K है जो स्पष्ट करता है कि A व्यक्ति के पास x वस्तु की O_G तथा y वस्तु की GK मात्रा है। इसी तरह B व्यक्ति के पास x वस्तु की KF तथा y वस्तु की KE मात्रा है। इस प्रकार x तथा y वस्तु की कुल मात्रा A तथा B व्यक्तियों में विभाजित है।

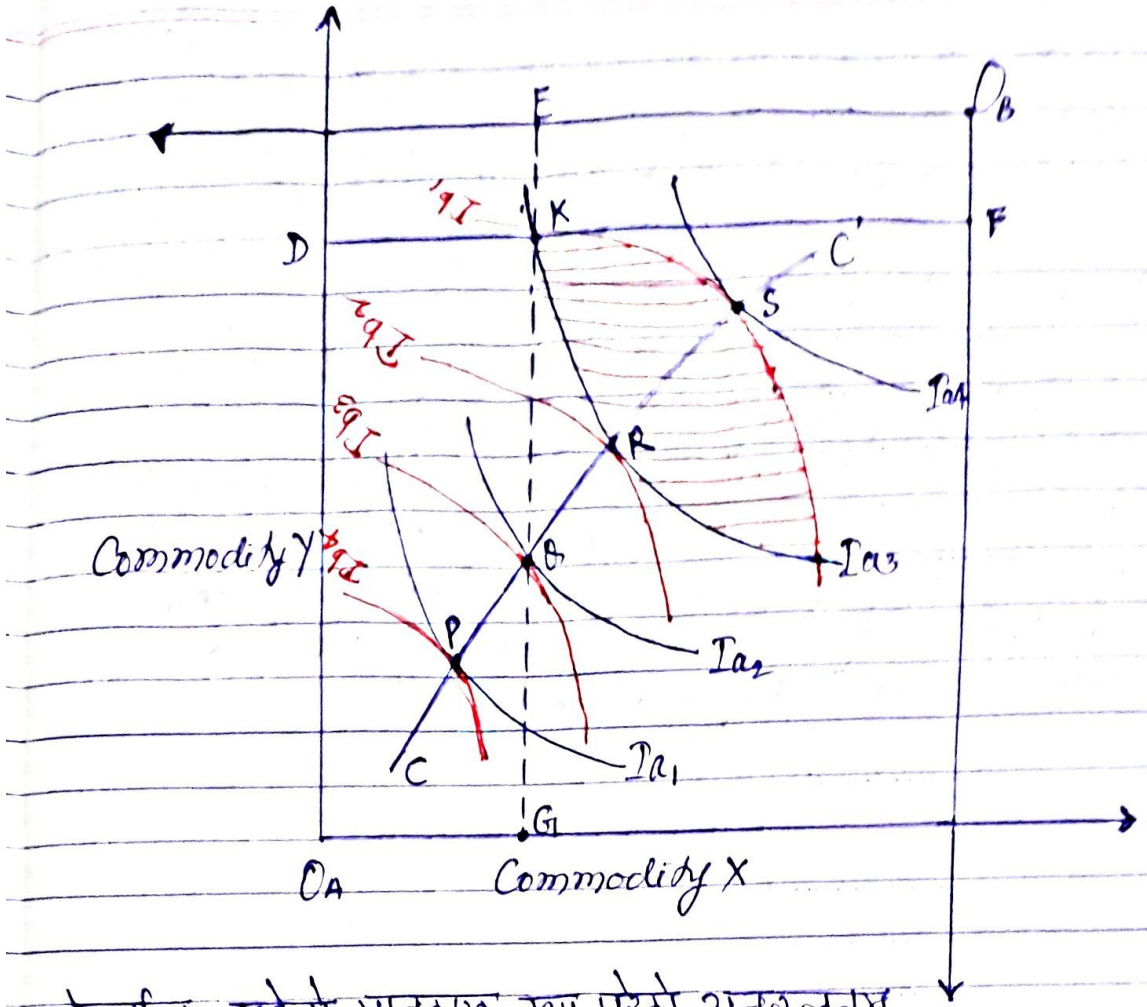

ऐजवर्थ - परेटो मानदण्ड तथा परेटो अनुकूलतम

परेटो मानदण्ड के अनुसार यदि K बिन्दु से S बिन्दु की ओर कोई पुनर्विन्यास होता है तो B व्यक्ति की सन्तुष्टि पूर्ववत् रहती है किन्तु A व्यक्ति की सन्तुष्टि का स्तर पहले की अपेक्षा बढ़ जाता है क्योंकि B व्यक्ति समान अनधिमान वक्र Ib_1 पर रहता है (K तथा S, Ib_1 पर होते हैं) तथा A व्यक्ति Ia_3 की तुलना में ऊँचे अनधिमान वक्र Ia_4 पर पहुँच जाता है। अतः K बिन्दु परेटो के अनुसार सामाजिक अनुकूलतम की स्थिति नहीं है।

इसी प्रकार यदि K से R की ओर कोई परिवर्तन किया जाता है तो A व्यक्ति का सन्तोष पूर्ववत् तथा B व्यक्ति का सन्तोष पहले की अपेक्षा

बढ़ जाता है। अतः R तथा S दोनों स्थितियाँ K की अपेक्षा श्रेष्ठ है। दोनों व्यक्तियों के विभिन्न अनधिमान वक्रों के स्पर्श बिन्दु सामाजिक अनुकूलतम के बिन्दु होते हैं, जिन्हें एक वक्र से जोड़ देने पर प्रसंविदा वक्र (Contract Curve) प्राप्त हो जाता है। इस वक्र पर यदि हम ऊपर अथवा नीचे की ओर चलते हैं तो एक व्यक्ति के संतोष में वृद्धि होती है तो दूसरे के सन्तोष में कमी हो जाती है जिसके कारण इसे संघर्ष वक्र (Conflict Curve) भी कहते हैं। परन्तु R और S में से कौन सी स्थिति अपेक्षाकृत श्रेष्ठ है, इसकी व्याख्या परेटो का मानदण्ड नहीं कर सकता है।